षष्ठ अध्याय

षष्ठ अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों का भाषा-शिल्प :-

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों की परिवेशगत भाषा

  (1) प्रसंगानुकूल भाषा (2) आलंकारिक भाषा

  (3) मुहावरेदार भाषा (4) भाषा में कहावतों का प्रयोग

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में संवादों का वैशिष्ट्य

(1) संक्षिप्त संवाद (2) विस्तृत संवाद

(3) चमत्कृत संवाद (4) पात्रानुकूल संवाद

(5) संवादों में हास्य (6) आत्मीय संवाद

(7) आक्रोशपूर्ण संवाद

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों की भाषा-शैली

(1) आत्मकथात्मक शैली (2) पत्रात्मक शैली

(3) डायरी शैली (4) वर्णनात्मक शैली

(5) गीतात्मक शैली (6) पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक शैली)

(7) व्यंग्यात्मक शैली

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में लोक गीतों का प्रयोग
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में शब्दों की विविधता

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों का भाषा-शिल्प :-

कोई भी मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति भाषा द्वारा करता है । एक समय था जब मानव संकेतों के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करता था । फिर धीरे-धीरे उसने बोलना सीखा । तत्पश्चात भाषा एवं बोली को शब्द रूप देने हेतु लिपियों की खोज हुई । कोई भी मनुष्य जब अपने विचार अभिव्यक्त करता है तो उस समय जो वाणी के संकेत ध्वनित होते हैं उसे भाषा कहते हैं । भाषा के लिये अनेक विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं । डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा भाषा के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं :-

"उच्चरित ध्वनि-संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति को भाषा कहते हैं ।"01

उसी प्रकार बाबू श्याम सुन्दर दास के अनुसार :-

"मनुष्य और मनुष्य के बीच, वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिये व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं ।"02

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि भाषा विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है ।

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों की परिवेशगत भाषा :-

राही मासूम रज़ा की भाषा वैविध्यपूर्ण है । लेखक का अनेक भाषाओं पर अधिकार दृष्टिगोचर होता है । यथा हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, अरबी, भोजपुरी, अवधि, संस्कृत तथा अंग्रेज़ी । राही जी अपनी भाषा के कौशल से किसी भी बात को कहने में सक्षम रहे हैं । शब्दों की प्रवाहमयी धारा लेखक को अपनी बात निर्भीकता से कहने में तथा बिना किसी लाग-लपेट के व्यक्त करने में सहायक-रूप साबित हुई है । राही जी को भाषा का जादूगर माना जाता है । इसीलिये राही जी अपनी बात को अशिक्षित आदमी से लेकर एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को बड़ी ही सरलता से समझाने में सक्षम रहे हैं । भाषा की दृष्टि से राही जी ने कभी किसी की परवाह नहीं की । शिवकुमार मिश्र राही जी की भाषा के सम्बन्ध में लिखते हैं :

"वे जीवन भर निर्भय रहे, निर्भीकता से अपनी बात कही । शब्दों की धारा को बनाए रखकर ठेट ज़बान और ठेट बोली में उन्हें जो कुछ कहना था, कहा, किसी का बेवजह लिहाज़ नहीं किया । उनके ज़मीर ने उन्हें हमेशा सच कहने को उकसाया और उसे कहने की ताकत दी य उनके तेवर ही उनका ज़मीर है ।"03

डॉ० राही मासूम रज़ा का आधा गाँव उपन्यास गाज़ीपुर तथा गंगौली गाँव को केन्द्र में रखकर लिखा गया है । यह शिया मुस्लिम समाज पर लिखा गया एक आँचलिक उपन्यास है । यह उपन्यास ग्रामीण परिवेश को उजागर करता है । इस उपन्यास के अन्तर्गत

उर्दू, भोजपुरी, अवधी तथा छत्तीसगढ़ी मिश्रित हिंदी बोली का प्रयोग हुआ है । राही जी की भाषा को इस प्रकार वर्गीकरण कर सकते हैं -

प्रसंगानुकूल भाषा :-

'आधा गाँव' उपन्यास के अन्तर्गत तीज-त्यौहार, शादी-ब्याह आदि प्रसंग के अनुकूल राही जी भाषा का प्रयोग करने में सफल हुए हैं । मोहर्रम आधा गाँव उपन्यास का आकर्षण का केन्द्र है । जहाँ मोहर्रम की तैयारियाँ ज़ोरों-शोरों से की जाती हैं । "सच तो यह है कि उन दिनो सारा साल मोहर्रम के इंतज़ार में ही कट जाता था । ईद की खुशी अपनी जगह, मगर मोहर्रम की खुशी भी कुछ कम नहीं हुआ करती थी । बक़रीद के बाद ही मोहर्रम की तैयारी शुरु हो जाती । दद्दा मरसिये गुनगुनाना शुरु कर देने, अम्मा हम सबका काला कपड़ा सीने में लग जातीं, और बाजी नौहों की बयाज़ें निकालकर नयी-नयी धुनों की मश्क़ करने लगतीं ।" 04

राही जी की भाषा का एक और सुन्दर उदाहरण :-

"मोहर्रम एक रूहानी ईद से कम नहीं हुआ करता था । नौहों की धुनें इस एहतियात से बनायी जातीं थीं कि ईद की सिवैयाँ भी शरमा जायँ ।"05

परिवेश को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग करने में राही जी अदभुत सिद्ध हुए हैं । कोई भी लेखक तब तक किसी भी स्थिति का भाषा के रूप में चित्रण नहीं कर सकता जब तक वह उस स्थिति से भली-भाँति अवगत न हो । इसलिये मोहर्रम के समय होन वाली प्रत्येक गतिविधि को ध्यान में रखकर राही जी ने इस परिवेश का बहुत बारीकी से चित्रण किया है । "बड़े ताज़िये के आगे-आगे अब्बू मियाँ कमर में पटका बाँधे, हाथ में चाँदी की मूँठ वाली एक छड़ी लिये सोज़ख्वानी करते । फुन्नन मियाँ, बशीर मियाँ और हम्माद मियाँ उनके बाज़ होते । ये लोग हर दो क़दम के बाद सलाम के दो शेर पढ़ते चलते । पीछे हज़ार-पाँच सौ आदमियों की भीड़ होती औरतें बच्चों को बड़े ताज़िये के नीचे से निकालतीं । मन्नतें मानतीं । जारी पढ़तीं और शरबत चढ़ातीं । ये औरतें सैदानियाँ नहीं हुआ करतीं थीं । क्योंकि

सैदानियाँ तो डोली बिना घर से निकल ही नहीं सकती थीं । ये तो गाँव की राकि़नें, जुलाहिनें, अहीरनें और चमाइनें होती थीं । बड़ा ताज़िया उनसे, उनकी मन्नतों और जारी की दर्द-भरी धुन से बेपरवाह किसी गजगामिनी या किसी सम्राट की तरह आगे बढ़ता चला जाता ।"06

त्यौहारों के वर्णन में राही जी ने हिंदू-मुस्लिम एकता को भी दर्शाया है । होली रंगो का त्यौहार है । जिसे प्रत्येक भारतीय बड़े ही उत्साह के साथ मनाता है । कटरा बी आरज़ू उपन्यास में राही जी ने अपनी भाषा के रंग से होली का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है :-

"होली का दिन था । कटरा मीर बुलाकी भी सात रंगों में सराबोर इन्द्रधनुष की तरह फैला हुआ था । बिल्लो नाच रही थी । देश गालियाँ बक रहा था कि होली के दिन गाली बकने का कोई बुरा नहीं मानता ।-

वह जुमे का दिन भी था । मौलवी ख़ैराती और शम्सू मियाँ इधर-उधर देखकर अपने घरों से निकले । सन्नटा था । पिछवाड़े वाली गली से निकल लिया जाये ।" शम्सू मियाँ ने कहा ।

दोनों ने दबे पाँव चोरों की तरह पिछवाड़े वाली गली की तरफ़ बढ़े । देश वगैरा तो इस ताक में ही थे । सब निकल आए । कुछ कटरा मीर बुलाकी के लोग थे और कुछ कटरा मीर बुलाकी के लोग नहीं थे । मौलवी खैराती और शम्सू मियाँ ने घिघियाकर पहलवान की तरफ़ देखा ।

"बहुत चंट बनते रहे ।"

"जुम्मे के मारे लुका गए रहे ।" शम्सू मियाँ ने कहा, "नहीं तो का कभई ऐयसा भया है कि हम होली न खेलें । अभई रंग खेलेंगे तो फिर नहाए को पड़ेगा । जुम्मे का बखत निकल जायेगा ।"07

शादी-ब्याह के अवसर पर वातावरण बहुत रंगीला दिखाई देता है । इन अवसरों का लुत्फ़ एक पाठक तभी उठा सकता है जब इस प्रकार के अवसरों को वातावरणानुसार कलमबद्ध किया गया हो अन्यथा उसका मज़ा जाता रहेगा । राही जी ने यह कमाल कर दिखाया है । बदरुन एवं मुईनुद्दीन के ब्याह के वातावरण को राही जी ने बहुत ही खूबसूरत ढंग से चित्रित किया है ।

"ढोल पर चाप पड़ी और बदरुन झट से माँझे बिठा दी गयी और फिर सैफुनिया की माँ उसे सुबह-शाम उबटन लगाने लगी । उसका खाना बिल्कुल बंद कर दिया गया । चुनाँचे उसके बदन की ज़रदी पर उबटन की चमक चढ़ने लगी और बदरुन उल्टे-सीधे ख्वाब देखने लगी । शादी-शुदा हमजोलियाँ और गाँव की भौजाइयाँ उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाने लगीं । कभी उसका दिल धड़कने लगता और कभी वह शरमा जाती । और लाजवंती की तरह अपने मैले कपड़ों में सिमट जाती । चमाइनों का गोल गंदी-गंदी गालियाँ गाने लगा । औरतें-शरीफ़ औरतें-वे गालियाँ सुनने लगीं । कभी किसी ने एक चवन्नी देकर किसी के लिये गाली गवायी । कभी उसने अठन्नी देकर गाली गवायी । नतीजे में मालूम हुआ कि सबकी बहनों को थानेदार ले भागा है और तमाम की तमाम शादीशुदा और ग़ैर-शादीशुदा औरतें हथिनियाँ हैं कि सौ-सौ मरदों से उनका जी नहीं भरता । और उन गालियों को सुन-सुनकर सब ठटठे लगाती रही, पान खाती रहीं ।"08

पाकिस्तान निर्माण पूरे देश के लिये एक दुःखद घटना है जिसका ज़ख्म बहुत ही गहरा ह । पाकिस्तान निर्माण के पश्चात गंगौली गाँव में एक तन्हाई-सी छा जाती है । यहाँ के लोगों को अकेलापन सदा के लिये चिपट जाता है । गंगौली के जवान लड़के अपनी बीवी बच्चों को अपने बूढ़े माँ-बाप के भरोसे छोड़कर पाकिस्तान चले जाते हैं । पाकिस्तान निर्माण ने यहाँ के परिवारो को बिखेर कर रख दिया । राही जी ने इनके अकेलेपन, इनकी झुंझलाहट को अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार पिरोया है । जब हकीम साहब का बेटा सद्दन सालों बाद गंगौली आता है । तब वह हकीम साहब से पूछता है । "आप कुछ परेशान लग रहे हैं ?" "नाहीं बेटा, हम बहुत खुश हैं । एक ठो बटा रहा ··· ऊ पाकिस्तान चला गया । एक ठो ज़मींदारी रही, ऊ को समझो कि पाकिस्तान चली गयी । अरे, जऊन चीज हमरे पास ना है, ऊ पाकिस्ताने न गयी ? हमरे पास रह का गवा है ? एक ठो बेवा बेटी, तीन ठो यतीम नवासे-नवासी, एक ठो बहू उहो बेवा ही है । तीन ठो पोते-पोती उहो को यतीम समझो । कल एक ठो खज़ाना और मिल गया । सुखरमवा नालिश कर दिहिस है । अब हम ओका कर्ज़ा कहाँ से दे ? दो-चार ठो मरीज़ आते रहे, तो कम्मो डागदरी शुरु कर दीहन । हमारी समझ में तो कुछ आता ना । नौ परानी का पेट कैसे चलायें ?"09

राही मासूम रज़ा अपनी भाषा को वातावरणानुसार परिवर्तित करने में सक्षम रहे हैं । जब फुन्नन मियाँ की बेटी रज़िया की मौत हो जाती है । फुन्नन मियाँ को टाट बाहर कर देने के कारण गंगौली का कोई भी मुसलमान इस मौत में शरीक नहीं होता है । उस समय का वर्णन राही जी ने अत्यंत मर्मस्पर्शी भाषा में किया है ।

"फुन्नन मियाँ जनाज़े को कर्बला की उत्तरी दीवार के पास अपनी ख़ानदानी गड़ावर के पास ले गये । क़ब्र तैयार थी । ताबूत रख दिया गया । मौलवी बेदार सद्रुल-फ़ाज़िल ने नमाज़े-जनाज़ा और गंगौली के मोमनीन ने नमाज़-जनाज़ा पढ़ने से इन्कार दिया, इसलिय फुन्नन मियाँ ने नमाज़े जनाज़ा तनहा पढ़ी । उन्हें नमाज़ याद नहीं थी, मगर उन्होंने नीयत बाँधी : पाक परवरदिगार । हम्में ते ई नमाज़ो याद ना है,का करे । बाकी़ हमरी ई नमाज़ क़बूल कर, अल्लाह अकबर कहकर उन्होंने बआवाज़े-बुलंद 'तकबीर' कहकर नमाज़ पढ़ डाली । फिर उन्होंने कब्र में उतरना चाहा । लेकिन पृथ्वीपाल सिंह ने उन्हें उतरने नहीं दिया, "हम उतारिब अपनी बहिन के ।" लेकिन ज़ाहिर है, फुन्नन मियाँ यह नहीं कर सकते थे । पृथ्वीपाल सिंह फिर ना-मरहम था । चुनाँचे वे खुद क़ब्र में उतरे । पृथ्वीपाल सिंह और झिंगुरिया ने लाश उतारी । फुन्नन मियाँ ने चेहरे से कफन सरकाया । बोले, "ए बेटी, हम का करें । हम्में तलकी़ न पढ़ना आता . . . बाकी़ हम गवाही दे रहे हैं कि तूँ मुहब्बे अहले बैत रहियो, नमाज़ी रहियो और मियाँ की ख़िदमतगार रहियो । वह कब्र से निकल आये कब्र बराबर कर दी गयी ।"10

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में हिन्दू-मुस्लिम दंगे, साम्प्रदायिक तनाव आदि का भी वर्णन किया है । इस समय राही जी की भाषा में भयावहता दिखाई देती है । "चारों तरफ इतने बड़े-बड़े शहर धायँ-धायँ जल रहे थे कि उस आग में बच्छन और सग़ीर फ़ातमा एक तिनके की तरह पड़ीं और भक से उड़ गयीं । दिल्ली, लाहौर, अमृतसर, कलकत्ता, ढाका, चटगाँव, सैदपुर, रावलपिण्डी, लालकि़ला, जामा मस्जिद, गोल्डन टैम्पुल, जलियाँ वाला बाग, हाल बाज़ार, उर्दू बाज़ार, अनारकली... अनारकली का नाम सग़ीर फ़ातमा था, या रजनी कौर या नलिनी बनर्जी था - अनारकली लाश खेत में थी, सड़क पर थी, मस्जिद और मन्दिर में थी और उनके नंगे बदन पर नाखूनों और दाँतों के निशान थे । और लोगों ने

ख़ून से भीगे हुए गरारों, शलवारों और साड़ियों के टुकड़ों को यादगार के तौर पर हाफ़्ज़े के सन्दूकों में सैंत-सैंतकर रख लिया था ।"11

दंगों की कोई भाषा नहीं होती । दंगे तो केवल दंगे होते हैं जो तलवार, बम, गोली आदि हथियारों की भाषा समझते हैं । इस परिवेश के लिये राही जी ने इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया हैः- "यह सुनते ही सारा मजमा उसकी तरफ़ लपका । वह भागा । दूसरी तरफ़ से एक बूढ़े सरदार जी आ रहे थे । इफ़्फ़न समझा कि अब मारा गया । परन्तु उन सरदार जी ने उसे जल्दी से अपने साफे में छिपा लिया । मजमें ने उन्हें घेर लिया एक ने तलवार मारी सरदार जी की गरदन कट गई । लुढ़कता हुआ सिर एक तरफ़ भागा । भीड़ ने उस सिर का पीछा किया । सिर एक सभा में घुस गया । एक बूढ़ा आदमी एक बूढ़ी ऐनक लगाये आधे बदन से नंगा कुछ कर रहा था । सिर उसके पीछे चला गया । एक आदमी ने गोली चलाई । बूढ़ा अदमी मर गया ।"12

राही जी की भाषा में सरलता के साथ-साथ विचित्रता के भी दर्शन होते हैं । किसी भी लेखक के लिये यह एक कठिन कार्य है कि वह हर छोटी से छोटी बात पर बाज़ की नज़र रख पाये । किन्तु राही जी की दृष्टि से कुछ भी अछूता नहीं रहा है । वह सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु अथवा स्थान को अपनी भाषा के जाल में फँसा ही लेते हैं । यह राही जी का एक बहुत बड़ा हुनर रहा है । "दिन ढल चुका था । सहनची में धूप का कोई हल्का-सा धब्बा भी नहीं था । धूप इमाम बाड़े की खपरैल को पार कर चुकी थी । कोठरी के कलस पर एक चील बैठी अपने पर तौल रही थी । मिग़दाद ने उसकी तरफ़ एक फ़र्ज़ी ढेला फेंका । वह उड़ गयी । अनवारुल हसन के मकान की खपरैल पर पालतू कबूतरों का एक ग़ोल बैठा हुआ था । उसने मिटटी का एक ढेला फेंक कर उन्हें भी उड़ा दिया । फिर गली वाले दरवाज़े को अंदर से बंद करके वह इमाम बाड़े के पूरबी कमरे में आ गया ।"13

भाषा की दृष्टि से आधा गाँव उपन्यास राही जी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इस उपन्यास में अपने शब्दों के चयन से राही जी पाकिस्तान-विभाजन के दर्द को बहुत ही सरल भाषा में प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं । इस विषय में सुरेश कुमार राही जी

के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं :- "हिंदी कथा साहित्य में आधा-गाँव मील का पत्थर साबित हुआ । राही को हिंदी कथाकार के रूप में स्वीकार कर लिया गया ।"41

आलंकारिक भाषा :-

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में अलंकृत भाषा के भी दर्शन होते हैं । भाषा में सौन्दर्य उत्पन्न करने के लिये अलंकृत भाषा का प्रयोग किया जाता है । जिस प्रकार एक स्त्री की सुन्दरता अलंकार ग्रहण करने पर और अधिक बढ़ जाती है, उसी प्रकार साहित्य में अलंकृत भाषा के प्रयोग से साहित्य की सुन्दरता में चार चाँद लग जाते हैं । राही जी के उपन्यासों में प्रयुक्त अलंकृत भाषा के उदाहरण :-

"कमरे में गयी रात का सन्नटा था । गयी रात का सन्नाटा कमरे के बाहर भी था । खजूरों का झुण्ड चुप था । पुराने क़िले का खँडहर चुप था । खँडहर की कमर में बाँहें डाले हुए वह सड़क चुप थी जो बिला किसी वजह के उस खाड़ी तक जाके यकायक खत्म हो जाता है । जिसमें कि मछेरों की हरे, पीले, गेरुये और तिरंगे झंडों वाली नौकाएं भी दिखायी देतीं । कभी वह खाड़ी अवश्य किसी काम की रही होगी नहीं तो उसके मुँह पर किला क्यों बनाया गया होता ! कभी नौकाएं आती रही होंगी उस खाड़ी में और तभी वह एक कच्ची सड़क बनायी गयी होगी जिस पर स्वतंत्र भारत की एक कारपोरेशन ने तारकोल और कंक्रीट का गिलाफ़ चढ़ा दिया और वह सड़क बा-इज़्ज़त सड़क बन गयी ।"15

राही जी ने बच्छन की सुन्दरता का आलंकारिक भाषा में कुछ इस प्रकार चित्रण किया है :-

"वह काजल नहीं लगाती थी, लेकिन ऐसा मालूम होता था जैसे सुबह उठते ही झंगटिया-बो ने उसकी आँखों में बड़े प्यार से काजल डाला है । उसने क़द भी खूब निकाला था । उसकी कमर इतनी पतली थी कि ख़ामख़ाह हाथ में लेने को जी चाहने लगे और कमर के नीचे चौड़े कूल्हों के ख़म यूँ लगते थे जैसे न्याज़ के कोरे कूँडे हों । उसका सीना तो दुपटटे के क़ाबू में ही नहीं आता था । दसहरी के काशो की तरह भरे-भरे तरोताज़ा होंठो से होकर जो आवाज़ निकलती थी, वह इतनी रसीली होती थी कि रस अब

टपका ओर तब टपका और उसका जूड़ा इतना बड़ा होता था कि नईमा-बी का सिर छोटा मालूम होने लगा था "16

मुहावरेदार भाषा :-

मुहावरेदार भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अपने मन के भावों को कम शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है । भाषा में सौन्दर्य एवं सौष्ठव की वृद्धि हेतु मुहावरों का प्रयोग का प्रयोग किया जाता है । लेखक अपने साहित्य में मुहावरों का प्रयोग कर भाषा को और अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षित बनाता है । "भाषा को सशक्त एवं गतिशील बनाने में मुहावरों का विशेष योग रहता है । मुहावरों के कारण भाषा में प्रांजलता और अभिव्यंजकता में वृद्धि होती है ।"17

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में प्रवाहमयता बनी रहती है । मुहावरों को भाषा का प्राण भी कहा गया है । इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए डॉ० विद्याधर द्विवेदी जी लिखते हैं - "मुहावरों की उपयोगिता का यह भी एक मुख्य अंग है । उनके द्वारा अनेक मानसिक भावों को थोड़े में प्रकट किया जा सकता है और बहुत सी आन्तरिक उलझनों का उनके द्वारा आसानी से निराकरण हो जाता है ।"18

राही मासूम रज़ा ने अपने साहित्य में अनेक सुन्दर मुहावरों का प्रयोग कर अपनी भाषा में चमत्कार उत्पन्न किया है ।

यथा :- "यह नौकरी दोधारी तलवार है । एक तरफ़ हिन्दुओं को मुसलमानों से काटती है और दूसरी तरफ़ मुसलमानों को हिन्दुओं से ।"19

"दादी से बदतमीज़ी करते हो ।" मुन्नी बाबू ने कहा

"त का हम इनकी पूजा करें ।"

"फिर क्या था ! दादी ने आसमान सिर पर उठा लिया । राम दुलारी ने उसे पीटना शुरु किया . . . "20

"हम्माद मियाँ वहाँ से परेशान लौटे । 'दरिया में रहकर मगरमच्छ से बैर' का मुहावरा पूरी तरह समझ आ गया ।"21

"अब्बू-दा ने एक भंगिन को पटटी पढ़ायी, उसे शादी के सब्ज़ बाग दिखाये-चुनाँचे उसके टोकरे स खज़ाना काटा गया ।"22

"तुम्हें यह हक़ किसने दिया कि तुम मुझसे इस क़िस्म के सवाल करो ? आपे में रहा करो ज़रा । दिमाग़ ज़्यादा ख़राब न हो । टोपी हक्का-बक्का रह गया ।"23

"मेरी जान में जान आ गयी कि चलो मुक़ाबला टल गया ।"24

इसके अतिरिक्त अन्य मुहावरे भी प्रयोग में मिलते हैं यथा :- साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे,25
जैसा देस वैसा भेस, छाती पर चढ़के मूँग दलना 26

भाषा में कहावतों का प्रयोग :-

यह मुहावरों का ही दूसरा रूप है । किन्तु इसमें एक प्रकार का तीखापन अथवा व्यंग्य दिखाई देता है । कथन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिय कहावतों का प्रयोग किया जाता है । यह लोकोक्ति के रूप में भी होती हैं । "यह एक ओर वास्तविकता का संकेत देती है, तो दूसरी ओर तीखी आलोचना या व्यंग्य का ।"27

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में कहावतों का भी सहज रूप में प्रयोग किया है ।

उदाहरण :-

"गोली मारो उस मुल्क को । मैंने ढाका युनिवर्सिटी में बात चलायी है । मगर यह तो वही क़िस्सा हुआ कि मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त ।"28

"मेरी जान में जान आ गयी कि चलो मुक़ाबला टल गया । वरना मरता क्या न करता ।"29

"रस्सी जल गयी पर बल नहीं गया । चार साल चक्की न पिसवायी तो नाम बदल दूँगा !"30

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों की भाषा-शैली :-

शैली को साहित्य का प्राण कहा जाता है । कोई भी साहित्यकार अपनी रचना लिखने से पूर्व एक विशिष्ट शैली को अपना लक्ष्य बनाता है तत्पश्चात वह उसकी रचना करता है । शैली एक प्रकार की तकनीक, रीत अथवा तरीके को कहा जाता है । शब्दकोश के अनुसार "शैली के अर्थ हैं- चाल, ढंग, प्रणाली, रीति, प्रथा, वाक्य रचना का विशिष्ट प्रकार ।"31 इस बारे में धीरेन्द्र वर्मा का कहना है, "शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं ।"32

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है :-

आत्मकथात्मक शैली :-

यह एक ऐसी शैली है जिसके माध्यम से लेखक स्वयं को पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है । इस शैली के माध्यम से लेखक अपने भाव अभिव्यक्त कर सकता है । सरल भाषा में यदि कहें तो इस शैली में लेखक स्वयं एक चरित्र की भूमिका निभाता है । इस शैली में लेखक दैनिक जीवन के किया-कलाप आदि को अभिव्यक्त करता है । आधा गाँव उपन्यास के अन्तर्गत इस शैली का एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

"एक बार ऐसा हुआ कि ज़ख्मी होकर मर जाने की बारी मेरी थी । मैं गिरकर मरा ही था कि बाजी आ गयीं, बोलीं, "ऐ मासूम, तनी लपक के एक पइसे की हरी बुकनी लिआ दो-ऊह बुडढा का जनी कहाँ जाके मर गया ।"

मैं चुप लेटा रहा । मैं कैसे बोलता, मैं तो मरा हुआ था ।

"ई मर गया है ।" भाई साहब ने बाजी को ख़बर दी ।

"का . . . !" बाजी घबराकर अम्माँ की तरफ़ भागीं । हम दोनों भाई चुपचाप बाहर सरक गये ।"33

पत्रात्मक शैली :-

इस शैली के माध्यम से उपन्यासकार अपनी रचना में रोचकता बनाये रखता है । तन्नू सईदा को एक पत्र लिखता है ।

उदाहरण :-

"अज़ीज़ा सईदा सल्लमहा, दुआएँ ।

मैं अच्छा हूँ । उम्मीद करता हूँ कि तुम भी अच्छी होगी । मैं तो एक गँवार फौजी हूँ । पता नहीं मुझे यह बात कैसे लिखनी चाहिए मगर लिखना यह है कि सल्लो से मेरी शादी की तारीख़ पड़ गयी है । उम्मीद है कि तुम नेग लेने ज़रूर आओगी । दादी अच्छी हैं । दादा गाज़ीपुर गये हुए हैं । वहाँ भी सब ख़ैरियत हैं । छोटी-दा तुम्हें दुआ लिखवा रही हैं । दुआएँ ।"

तुम्हारा भाई

तन्नू "34

सईदा इस पत्र का जवाब कुछ इस प्रकार देती है :-

"आपका ख़त मिला । ख़ैरियत मालूम हुई । मैं अच्छी ह् और आप लोगों की ख़ैरियत खुदाबन्दे-करीम से नेक चाहती हूँ । आपने तो ऐसा दिन चुनकर रखा है कि मैं शरीक न हो सकूँ । जाइये, मैं आपसे ख़फ़ा हो गयी ।

वहाँ सबको आदाब ।

फ़क़त

सईदा"35

डायरी शैली :-

यह शैली व्यक्ति की निजी बातों का दस्तावेज है । जो बातें व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से किसी से नहीं कह सकता वह डायरी में लिखता है । इस शैली में एक लेखक कुछ महत्वपूर्ण एवं सत्य घटनाओं आदि को प्रस्तुत करता है । इस विषय में राही जी स्वयं ओस की बूँद के अन्तर्गत 'डायरी का एक पन्ना' में लिखते हैं - "डायरी लिखना बड़ी बेवकूफ़ी की बात है, क्योंकि डायरी में सत्य लिखना पड़ता है, और कभी-कभी सत्य लिखना नहीं होता । कभी-कभी तो यह जानना भी असंभव हो जाता है कि सत्य क्या है और असत्य क्या है । कोई लाख चाहे कि परछाई से पिंड छूट जाए, परंतु यह संभव नहीं ।"36

'ओस की बूँद' उपन्यास से डायरी शैली का एक उदाहरण :-

"सच पूछिये तो मैं यह डायरी इसलिये लिख रहा हूँ कि समय की आँखों में आँखें डालकर यह कह दूँ : हाँ-हाँ,मुझे मालूम है कि कल पाकिस्तान बन गया, और मुझे यह भी मालूम है कि आज भारत स्वतंत्र हो गया है, और मुझे यह भी मालूम है कि मेरा नाम मुहम्मद वक़ारुल्लाह अंसारी है ̈ " 37

वर्णानात्मक शैली :-

इस शैली के द्वारा रचनाकार अपने समाज के किसी भी पहलू अथवा वातावरण की निर्मिति का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है । आधा गाँव उपन्यास के अन्तर्गत इस शैली का सबसे अधिक प्रयोग हुआ है यथा :-

"उत्तर-पट्टी में कोई चीज़ इमाम बाड़े की रौनक़ की बराबरी करनेवाली थी तो यही डिप्टी अली हादी का कमरा था- अलमों, पटकों, लकड़ी के खूबसूरत ताज़ियों, सोज़ख्वानी के बस्तों, हाँडिया, कँवलों, ऊददानों और गुलाबपाशों की कशिश अपनी जगह, लेकिन डिप्टी अली हादी के कमरे की तरशी-तरशाई भाँति-भाँति की कुर्सियों, आरामकुर्सियों और तिपाइयों की शान भी निराली थीं, मरसियों को मुँह लगाने पर तैयार नहीं ऊददानों पर तरह-तरह के सिगरेट-केस चुपके-चुपके मुस्कराया करते थे ।"38

उसी प्रकार लेखक अपने गंगौली गाँव एवं गाज़ीपुर की गंगा की कहानी कुछ इस प्रकार सना रहा है -

"गंगा इस नगर के सिर पर और गालों पर हाथ फेरती है, जैसे कोई माँ अपने बीमार बच्चे को प्यार कर रही हो, परंतु जब इस प्यार की कोई प्रतिकिया नहीं होती, तो गंगा बिलख-बिलखकर रोने लगती है और यह नगर उसके आँसुओं में डूब जाता है । लोग कहते हैं कि बाढ़ आ गयी । मुसलमान अज़ान देने लगते हैं । हिंदू गंगा पर चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं कि रूठी हुई गंगा मैया मान जाये । अपने प्यार की इस हतक पर गंगा झल्ला जाती है । और क़िले की दीवार से अपना सिर टकराने लगती है और उसके उजले सफ़ेद बाल उलझकर दूर-दूर तक फैल जाते हैं । हम उन्हें झाग कहते हैं । गंगा जब यह देखती है कि उसके दुःख को कोई नहीं समझता, तो वह अपने आँसू पोंछ डालती है, तब हम यह कहते हैं कि पानी उतर गया । मुसलमान कहते हैं कि अज़ान का वार कभी ख़ाली नहीं जाता, हिंदू कहते हैं कि गंगा ने उनकी भेंट स्वीकार कर ली । और कोई यह नहीं कहता कि माँ के आँसुओं ने ज़मीन को और भी उपजाऊ बना दिया है ... दूर-दूर तक ज़मीन पर नर्म मिटटी का एक ग़िलाफ़-सा चढ़ जाता है । परन्तु गंगा भी क्या करे, डाँगर-बैलों में हल का बोझ उठाने की ताक़त ही नहीं है ।"39

गीतात्मक शैली :-

डॉ० राही मासूम रज़ा एक उपन्यासकार होने के साथ-साथ एक संवेदनशील कवि तथा शायर भी रहे हैं । अतः राही जी के लगभग सभी उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग हुआ है । राही जी ने अपने उपन्यासों में प्रसंगानुसार गीत, मरसिये, गज़ल, शेर, विरहगीत, विवाह गीत आदि की रचना की है ।

आधा गाँव उपन्यास के अंतर्गत मोहर्रम के अवसर पर मरसिये, नौहे, सोज़ख़्वानी आदि का चित्रण राही जी ने किया है । सोज़ख़्वानी का उदाहरण :-

नज्जन ने गुनगुनाना शुरु किया :

'जिस घड़ी नहर प-ख़ैमे शहे-वाला के हुए,
और सितमगार मज़ाहिम लबे-दरया के हुए ...' 40

फुन्नन मियाँ की बेटी रज़िया की मौत हो जाने पर उनकी आँखें भीग जाती हैं । फुन्नन मियाँ बहादुर आदमी थे रो नहीं सकते थे । इसलिये वह शेर गुनगुनाने लगते हैं ।

"मैं यह नहीं कहती कि अमारी में बिठा दो ।
बाबा मुझे फिज्ज़ा की स्वारी में बिठा दो । "41

मरसिया :-

"खौ़फ के मारे सकीना का अजब था अहवाल ।
माँ से लिपटी हुई चिल्लाती थी वह नेक-ख़िसाल ।।
जाँ-ब-लबं हूँ शहे-वाला को बुला दे कोई ।
अरे लोगों, मेरे बाबा को बुला दे कोई ।।
अरे लोगों, मेरे भैया अली अकबर हैं कहाँ ।
किससे बुलवाऊँ, फूफीजान के दिलबर हैं कहाँ ।।
लूटी जाती है दुल्हन, क़ासिमे-मुज़्तर हैं कहाँ ।
उनके कुरबान मैं, अब्बासे - दिलावर हैं कहाँ ।।
ग़श में बिस्तर पर जो सज्जाद पड़े थे तनहा ।
बेहवासी में सकीना गयी दौड़ी उस जा ।।
नन्हें-से हाथों से बाज़ू को हिलाकर ये कहा -
फफी अम्मा की रिदा छिन गयी, उटठो भैया ।।
जी मेरा डरता है,जी मेरा डरता है छाती से लगा लो मुझको ।
मेरे गौहर न कोई छीने, छुपा लो मुझको ।।" 42

नज़्म :-

"इस जहाने-जरो-जुलमत में भटकते रहे हम
नज़्में लिक्खीं तो दुकानों पे ख़रीदार न थे
हमने नावेल लिखे, अफ़साने लिखे, गीत लिखे

अपने सिक्कों ही की ख़ातिर कहीं बाज़ार न थे
नित नये हाथों में और नित नयी दुकानों पर
रोशनाई के लिये खुद को बेचा किये हम
ताकि सिर्फ़ इसलिये कुछ लिखने से बाकी न रहे
कि क़लम खुश्क़ थे और लिखने से मजबूर थे हम ।"43

विवाह गीत :-

"रसगुल्ला घुमाय के मार दियो रे।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुरजी को मारा ।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुरजी को मारा ।
उनको बूढ़ा समझ के छोड़ दियों रे ।
रसगुल्ला घमाय के मार दियो रे -"44

विरह गीत :-

"बरसतः में कोऊ घर से ना निकसे
तुमहिं अनूक बिदेस जवैया ...."45

विदाई गीत :-

"दमड़ी का सेंनुर महंग भई बाबा,
चुनरी भई अनमोल ।
एही रे सेंनुरवा के कारन रे बाबा,
छुड़ल्यों मैं देस तुहार ।
डोलिया का बाँस पकड़े रोयें बीरन भैया
बहिना मोरी दूर देसी भई, परदेसी भई ।
कौन लगैयहे बजरिया मे आखिर बीरन के अँसुअन का मोल रे
बाबुल,
चुनरी भई अनमोल -"46

पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली :-

लेखक इस शैली का प्रयोग पात्र के अन्तर्मन में चल रहे अनेक विचारों एवं घटनाओं के लिये करता है । जहाँ उपन्यास का पात्र भूतकाल में घटित घटनाओं को स्मरण करता है । राही जी के उपन्यासों में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है । दिल एक सादा कागज़ का रफ्फ़न अपने गाँव गाज़ीपुर, अपने ज़ैदी विला को कभी नहीं भूला । रफ्फ़न की यादों में उसका घर हमेशा रहा । ज़ैदी विला की छोटी-छोटी बातों को वह याद करता है । "एक बार वह एक मुशायरे में गाज़ीपुर गया तो एक दोस्त जगत मुरारी के साथ ठहरा । गुरचरण शाह ने उसकी दावत की और ज़ैदी विला में मेहमान बनकर गया । गोल कमरे में बैठा । लगा कि कर्नल साहब अपनी कुर्सी पर बैठे सिगार पी रहे हैं । अब्बू सोफे में धँसे जज साहब से किसी और जज की बेवकूफी की कोई कहानी सुना रहे हैं । सैदानी बी की आवाज़ आ रही है-इस बच्चे ने अपने उस्ताद का कहा न माना, इसलिए जहन्नुम की आग में जल रहा है । ... कहीं दूर से उसकी अपनी आवाज़ आ रही थी । वह बड़े जोश में अपनी कविता सुना रहा था । मत्तो, सकूनत बुआ, माली, उसकी पत्नी रुकमनिया और बिल में घुसने वाला साँप, बाबू जगदम्बा प्रसाद और उनका थैला ... मौलसरी के पेड़ पर चढ़ी हुई दोपहर । फुफ्फू के लेहाफ़ में दुबकी जाड़े की रातें । .. यह तमाम यादें बड़े शौक से उसकी नज़्में सुन रही थीं और सिर धुन रही थीं ।"47

व्यंग्यात्मक शैली :-

व्यंग्यात्मक शैली में तीखापन विद्यमान रहता है । इस शैली का प्रयोग लेखक समाज की राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेतु करता है । व्यंग्यात्मक शैली में कही गयी बात तीर के समान प्रहारी होती है जिसके माध्यम से लेखक व्यक्ति अथवा समाज में पनप रही गन्दगी को दूर करने का प्रयत्न करता है । लेखक के लिये यह एक बड़ी चुनौती होती है । इस सम्बन्ध में प्रेम जनमेजय जी लिखते हैं - "व्यंग्यकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि क्या उसके इस कर्म से समाज में हो रहा मूल्यों का

सद्भाव रुक जायेगा, क्या 'अपराधी' अपने अपराध से बाज़ आ जायेगा ? क्या वर्तमान परिस्थितयों में ऐसा हो रहा है ? क्या राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्यकार ने व्यंग्य को रोक दिया है ? यह सवाल तो पूरे साहित्य में किया जा सकता है । साहित्यकार का काम तलवार पकड़ने का संस्कार देना है, न कि तलवार देना ।"48

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने कई उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग किया है । यथा 'ओस की बूँद','कटरा बी आरज़ू', सीन : 75', 'नीम का पेड़' तथा 'टोपी शुक्ला'। इन उपन्यासों में राही जी ने साम्प्रदायिकता एवं राजनीति पर व्यंग्य किया है । टोपी शुक्ला उपन्यास व्यंग्य-प्रधान शैली में लिखा गया है । हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों को राही जी ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर समाज को सोचने पर मजबूर किया है । इस उपन्यास के माध्यम से व्यंग्य प्रधान शैली में राही जी ने ऐसी-ऐसी स्थितियों से अवगत कराया है जो इस समाज के लिये चुनौती है ।

"तीन बरस से यही किताब पढ़ रहे हो, तुम्हें तो सारे जवाब ज़बानी याद हो गये होंगे ! इन लड़कों को अगले साल हाईस्कूल का इम्तिहान देना है । तुमसे पारसाल पूछ लूँगा ।"49

"जब ज़मीदारी ही नहीं रहेगी तो दुखतरी किससे लेंगे मियाँ... बाबा मरहूम की कबर से ?"50

"इनसे तो मिल चुकी होगी ? यह यहाँ का मुस्लिम लीगी हिन्दू है ।"51

"हद हो गई । डॉक्टर लोग अब हँसने पर भी रोक लगाने लगे । अपने देश में हँसने मौके ही कहाँ आते हैं ।"52

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में संवादों का वैशिष्टय :-

संवाद के द्वारा ही लेखक अपने पात्रों को जीवन्त रूप प्रदान करता है । एक लेखक तभी सफल माना जाता है जब वह पात्रों के अनुकूल संवादों को उनसे कहलवाता है । उपन्यास में पात्र की अहम भूमिका होती है किन्तु उनका विकास संवाद द्वारा होता है । एक पाठक संवाद के माध्यम से ही पात्र के विचार, उसकी मनोव्यथा आदि को समझ पाता है । राही मासूम रज़ा संवाद की दृष्टि से एक सफल उपन्यासकार है । महाभारत के संवाद लिखने वाले राही मासूम रज़ा एक महान संवाददाता के रूप में जाने जाते हैं । यह उनके संवाद का जादू ही था कि एक आम आदमी भी महाभारत को समझने में सक्षम रहा ।

संक्षिप्त संवाद :-

संक्षिप्त संवाद की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि पाठक उसको जल्दी गहन कर लेता है । राही मासूम रज़ा अपने उपन्यास आधा गाँव एवं टोपी शुक्ला आदि में संक्षिप्त संवादों का अधिक प्रयोग किया है ।

यथा :-

मिग़दाद और अब्बास के संवाद -

"हे भैया, ई आपका पकिस्तान-ओकिस्तान कब बनिहै भाई ?"

"क्यों ?" क्या मुस्लिम लीग को वोट दोगे ?"

"हाँ !"

"और जो अब्बा ने डाँटा ।"

"ओट हमरा है कि अब्बा का !"

"मगर तुम अभी बच्चे हो, तुम्हारा वोट नहीं होगा ।"53

जब टोपी शुक्ला घर छोड़कर चला जाता है तब उसकी मुलाक़ात इफ़्फ़न से होती है । टोपी शुक्ला हिन्दू परिवार से है । और यह परिवार

कटटरता के साथ अपने धर्म का अनुसरण करता है । टोपी और इफ़्फ़न के संवाद से यह स्थिति परिलक्षित होती है -

"तूँ मियाँ हौ जी ?"

"मियाँ ?"

"तूँ मुसलमान हौ ?"

"हाँ"

"और ई लोग ?"

"ये मेरे अब्बू हैं । ये मेरी अम्मा हैं और ये दद्दा ।"

"हम ई ना पूछ रहें । "का ईहो लोग मियाँ हैं ?"

"हाँ ।" हम लोग मियाँ हैं ।"

"तब हम हियाँ खा ओ ना सकते ।"

"क्यों ?"

"हम लोग मियाँ लोगन का छुआ ना खाते ।"

"मगर क्यों नहीं खाते ?"

"मियाँ लोग बहुत बुरे होवें ।"54

विस्तृत संवाद :-

विस्तृत संवाद भी अपनी अलग पहचान रखते हैं । किन्तु संवाद विस्तृत होने के कारण वह इतने प्रभाविक नहीं होते हैं । इस तरह के संवादो से उपन्यास में रस की कमी खलने लगती है । इस प्रकार के संवादों के उदारहरण राही जी के उपन्यास दिल एक सादा कागज़, आधा गाँव, कटरा बी आरजू, नीम का पेड़ आदि में मिलते हैं । देशराज और जोखन के विस्तृत संवाद का उदाहरण -

"गरीब मुहल्ले के मुँह पर नाक अच्छी भी ना लगती जोखन चा ! हम तो एक दिन आसाराम से साफ-साफ पछ लिया कि भाई मिनिस्टर लोग तो घूँस खाके जी लीहें, पर जनता बेचारी का खाये ? ऊ लगे लेकचर झाड़े कि मार्क्सवाद ई और

मार्क्सवाद ऊ । तो हम कहा, बस रहे दिजिए । लेकचर से पेट भर सकता तो लेकचर देसावर भेजते । लेकचर की पैदावार इफ़रात है अपने मुलुक में । बीड़ी दीजिए ।"55

तन्नू फौज से वापस आता है । खाना खाते समय बशीर मियाँ तथा तन्नू के विस्तृत संवाद का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

"जंग बड़ी बेहूदा चीज़ होती है साहब ! अपने साथियों के ख़ून और जौहड़ के पानी में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाता । जिस तरह आपको मुक़दमों की मिसिल देखने की आदत हो जाती है, उसी तरह हमें ज़ख्म देखने और चीख़ें सुनने की आदत हो जाती है ।"56

चमत्कार पूर्ण संवाद :-

यह संवाद का एक महत्वपूर्ण गुण माना जाता है । राही मासूम रज़ा के संवादों में यह चमत्कार दृष्टिगोचर होता है । इस प्रकार से संवाद से पाठक बिना आकर्षित हुए नहीं रह पाता । टोपी शुक्ला और सकीना के बीच के होने वाले संवाद इस प्रकार हैं -

"तो तुम्हें उस डॉक्टर न मालूम कौन शुक्ला ने बिलकुल निकाल दिया ?"

"डॉक्टर"न मालूम कौन नहीं । डॉक्टर भृगु नारायण शुक्ला नीले तेल वाले ।"

"होगे ।"

"होंगे नहीं, हैं ।"

"तुमसे फँसने का मतलब यह तो नहीं कि मेरे बाप का नाम डॉक्टर न मालूम कौन हो जाए ?"

"सूरत देखी है अपनी ।"

"रोज़ देखता हूँ ।"57

'कटरा बी आरज़ू' उपन्यास में देशराज और बिल्लो के बीच के संवाद में जो शरारतीपन दिखाई देता है उससे संवाद में चमत्कार उत्पन्न हुआ है ।

यथा :-

"तो हमसे एक हजार एक मरतबा सुन ल्यो कि मुन्ना-टुन्ना न होगा । मुन्नी होगी ।"

"मुन्ना होगा ।"

"हमरे बगैर ही हो जाएगा ।"

"उतनी दूर खड़ी होके समाए में का मज़ा ! इहाँ हमरे पास बैयठ क समाव अराम से ।"

"ई खींचातानी हम्में अच्छी ना लगती । अच्छी-भली इसतिरी की हुई खराब हो गई।"

"फिकर नाट डारलिंग । जनता लांडरी की माल्किन से हमरा अफेयर चल रहा । हाफ रेट पर धुलवा देंगे ।"58

पात्रानुकूल संवाद :-

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में संवादों की विविधता पायी जाती है । यहाँ राही जी ने शिक्षित एवं अशिक्षित, ग्रामीण तथा शहरी आदि पात्रों के अनुकूल अपने संवादों को ढाला है । जहाँ राही जी ने खड़ी बोली उर्दू, भोजपुरी आदि संवाद का प्रयोग किया है । मिगदाद और सैफुनिया के संवाद से उनकी मातृभाषा झलकती है ।

"बाकी हमरा-तुम्हरा ब्याह कैसे हुइहै !"

"दस बीघे खेती हमरे नाम है, "हम अलग हो जायँगे ।"

"अ रहा कहाँ जैयहे ।"

"उहे ख़िलवतिया में "जिहको छोड़के हम लोग हेईवाले मकान में आये हैं ।

"और जौन मियाँ ना रहे दिहिन ?"59

'ओस की बूँद' उपन्यास के अन्तर्गत राही जी के संवाद शुद्ध खड़ी बोली अथवा उर्दू में हैं । शहला और वज़ीर हसन द्वारा बोले गये संवाद दर्शनीय है -

"दादा, हमको आप वह ग़ज़ल मँगवा दीजिए, जो उन्होंने कल मुशायरे में पढ़ी थी ।"

"बड़ी अच्छी ग़ज़ल थी क्या ?"

"जी हाँ । भाषा तो ऐसी सरल थी कि क्या बताऊँ ?"

"क्या चीज़, क्या थी ?"

"मेरा मतलब है ज़बान ऐसी ...." सरल को क्या कहते हैं उर्दू में ?"

"मैं जानता तो तुमसे पूछता क्यों ?"60

उसी प्रकार वज़ीर हसन द्वारा उर्दू में बोले गये संवाद का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

"मैं पैग़म्बर नहीं हूँ कि हिजरत को फ़लसफ़ा बना लूँ । मैं एक गुनाहगार आदमी हूँ और उसी सरज़मीन पर मरना चाहता हूँ, जिस पर मैंने गुनाह किए हैं ।"61

'दिल एक सादा कागज़' उपन्यास फिल्मी वातावरण को उजागर करता है । जहाँ डाइरेक्टर, प्रोडयूसर, हीरो-हीरोइन आदि के आपसी संवाद के दर्शन होते हैं । उपन्यास के अन्तर्गत रफ्फ़न एक लेखक है । रफ्फ़न को मँझला प्रोडयूसर के द्वारा बोले गये संवाद -

"कोई सब्जेक्ट साला आज तक फ़ाइनल हुआ है कि तुम्हारा ही फ़ाइनल हो जायेगा । काम करते रहो । अभी तो साला डाइरेक्टर उँगलिआयेगा । परसों कह रहा था कि मुखरामजी का एक सब्जेक्ट सुना है । मैंने भी कल गुलशन नन्दा से एक सब्जेक्ट सुना है । साला क्या लिखता है ... अभी यह सौ का नोट रक्खो फिर देखते हैं ।"62

संवादों में हास्य :-

संवादों के माध्यम से लेखक हास्य भी उत्पन्न करता है । राही मासूम रज़ा ऐसे वातावरण का निर्माण करने में सफल रहे हैं । इस प्रकार के संवादों के लिये लेखक कुछ ऐसी स्थितियों की निर्मिति करता है जिससे वहाँ हास्य का वातावरण उत्पन्न हो ।

टोपी शुक्ला जब इफ्फ़न के घर पर साइकिल देखता है तो वह साइकिल देखकर बहुत खुश होता है । जब वह अपने घर आता है तो उसे पता चलता है कि रामदुलारी यानि उसकी माँ को तीसरा बच्चा होने वाला है । नौकरानी और टोपी के बीच संवाद -

"भाई होई कि बहिन ?"

"साइकिल ना हो सकती का ?"63

उसी प्रकार से आधा गाँव उपन्यास के अम्मू और मासूम के संवाद एक उदाहरण प्रस्तुत है ।

"ई सभन के पास पइजामा ना है का ?"

"ई हरमज़ादे हैं ।"

"हरमज़ादा का होत है ?"

"भाउज से पूछ लिहो ।"

"नहीं आप बताइये ।"64

आत्मीय संवाद :-

सभी फौज वाले लौट आते हैं किन्तु फुन्नन मियाँ का बेटा इम्तियाज़ नहीं लौटा है । उनका एक बेटा मुम्ताज़ तो पहले ही शहीद हो चुका था । जब इम्तियाज़ भी लौटकर नहीं आता तो उस समय फुन्नन मियाँ और उनकी बीवी कुलसूम के बीच आत्मीय संवाद का उदाहरण -

"सब फ़उज वाले लउट आये । अ बहुत से-त जेलो पहुँच गये कउनो आते ही फ़उजदारी किहिन । कउनो कोई की अउरत उठा ले गये । कोई चोरी किहिस अउर कोई डाका डालिस । इमतिआजो होते त लउट चुके होते । हम लोगन की किसमत में औलाद का सुख ना है । दुई ठो लड़के रहे । दूनों मरे गये । लड़कियाँ त कंधा दे ना सकतीं । हमरी-तोहरी लशिया कउन उध्य्यहें ?"65

टोपी शुक्ला को परिवार में सदैव तिरस्कृत किया जाता है । उसकी दादी भी हमेशा उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को ही लाड़-दुलार करती और टोपी दिल मसोस कर रह जाता । इसीलिए जब वह अपने दोस्त इफ्फ़न की दादी से मिलता है तो वह उससे बहुत प्रेम से बात करती हैं ।

इफ्फ़न और टोपी के बीच हाने वाले संवाद-

"अय्यसा ना हो सकता की हम लोग दादी बदल लें तोहरी दादी हमरे घर आ जायें हमरी दादी तोहरे घर चली जाएँ । हमरी दादी तो बोलयियो तूँहीं लोगन को बो-ल-थीं ।

"यह नहीं हो सकता । अब्बू यह बात नहीं मानेंगे । और मुझे कहानी कौन सुनाएगा ? तुम्हारी दादी को बारह बुर्ज की कहानी आती है ?"

"तूँ हम्में एक ठो दादियो ना दे सकत्यों ?"

"जो मेरी दादी हैं वह मेरे अब्बू की अम्माँ भी तो हैं ।"

"तुम्हारी दादी मेरी दादी की तरह बूढ़ी होंगी ?"

"हाँ"

"तो फ़िकर न करो । मेरी दादी कहती हैं बूढ़े लोग मर जाते हैं ।"

"हमरी दादी ना मरिहे ।"

"मरेगी कैसे नहीं ? क्या मेरी दादी झूठी है ?"

उसी वक़्त पता चलता है कि इफ़्फ़न की दादी की मौत हो गयी ।

"तौरी दादी की जगह हमरी दादी मर गई होती त ठीक भया होता ।"66

"मैं तुम्हारे पास चुपके स आना भी चाहूँ, तो नहीं आ सकता । यह लकड़ी की टाँग टुक... टुक... टुक.. बोले जाती है ।" 67

आक्रोशपूर्ण संवाद :-

"इ हमरी बेटी है । हम मार डालेंगे, कोई से मतलब । अब हम उनन्हें का कहें जो ई आफ़त हमरे पेट पर मार के चले गये..."68

"तुम मुसलमानों से नफ़रत करते हो । सकीना हिन्दुओं से घिन खाती है । मैं ... मैं डरता हूँ शायद । हमारा अंजाम क्या होगा बलभद्र ? मेरे दिल का डर तुम्हारे और सकीना के दिल की नफ़रत - ये क्या इतनी अटल सच्चाइयाँ हैं जो बदल नहीं सकतीं ? हिस्ट्री का टीचर कल क्या पढ़ायेगा ? वह इस सूरते हाल को कैसे एक्सप्लेन करेगा कि मैं तुमसे डरता था और तुम मुझसे नफ़रत करते थे । फिर भी हम दोस्त थे । मैं तुम्हें मार क्यों नहीं डालता ? तुम मझे क़त्ल क्यों नहीं कर देते ?"69

"यह नौकरी दोधारी तलवार है । एक तरफ़ हिन्दुओं को मुसलमानों से काटती है और दूसरी तरफ़ मुसलमानों को हिन्दुओं से ! हालाँकि बात यह है कि देश नया-नया आज़ाद हुआ है तो क्या उन लड़कों का नौकरियों पर अधिकार नहीं है जिनके बाप, मामू, दूर के चाचा दूर के मामू गरज़ कि किसी भी रिश्तेदार ने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था ? बाक़ी लोग तो घरों में बैठे थे जब ये दूर-पास के रिश्तेदार गोलियाँ खा रहे थे । या अगर मैं किसी कमीशन का मेम्बर हूँ तो क्या उनके नीचे आने वाली तमाम नौकरियों पर मेरे रिश्तेदारों या जाति-बिरादरी वालों पर हक़ ज़्यादा नहीं हो जाता ?"70

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में लोकगीतों का प्रयोग :-

लोक गीत ग्रामीण संस्कृति की पहचान है । लोक गीत के माध्यम से ग्रामीण समाज अपने दुःखों को भूल कर जीवन का आनंद प्राप्त करता है । लोकगीत भारतीय जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । इन लोकगीतों की गूँज प्रत्येक क्षेत्र में सुनाई देती है यथा : जन्म संस्कार, रोपनी, कटाई, रीति-रिवाज, व्रत-त्यौकार आदि । साहित्य में लोकगीतों के प्रयोग से चरित्रों के परिवेश तथा रीति-रिवाज आदि पर प्रकाश पड़ता है जिससे परिवेश जीवंत हो उठता है । लोकगीत आज भी शहरी और ग्रामीण जीवन दोनों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं ।

"'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शने' धातु से 'घञ'प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुआ है । इस धातु का अर्थ देखना होता है जिसका 'लट-लकार' में अन्य पुरुष एक वचन का रूप 'लोकते' हैं । अर्थ 'लोक' शब्द का अर्थ हुआ 'देखने वाला'। अतः वह समस्त जनसमुदाय जो इस कार्य को करता है, 'लोक' कहलाएगा । 'लोक' शब्द अत्यंत प्राचीन है साधारण जनता के अर्थ में उसका प्रयोग ऋग्वेद ने में अनेक स्थानों पर किया गया है । ऋग्वेद 'लोक' शब्द के लिए 'जन' का भी प्रयोग किया गया है ।"71

डॉ० राही मासूम रज़ा के सम्पूर्ण साहित्य में भारतीय संस्कृति की छाप दिखाई देती है । राही जी ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा जीवन के अनेक

पहलुओं में लोक जीवन का सहज चित्रण किया है । लोक गीत भारतीय संस्कृति की पहचान है । भारतीय समाज में अनेक प्रसंगों यथा : जन्म संस्कार, रोपनी, व्रत, त्यौहार, विवाह, आदि पर लोक गीतों का प्रयोग किया जाता है । लोक गीत भारतीय जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है । साहित्य में लोक गीतों के प्रयोग से चरित्रों के परिवेश, रीति रिवाज आदि पर प्रकाश पड़ता है । जिससे परिवेश जीवंत हो उठता है ।

'लोक' अपने भरे-पूरे अर्थ में अत्यंत प्राचीन सभ्यता को अपने हृदय में बसाए हुए है । जिसमें किसी भी प्रकार का बनावटीपन नहीं है । 'लोक' अपनी पारंपरिक जड़ों को मज़बूती से पकड़े हुए है । जहाँ सभ्यता, संस्कृति एवं अपनी परंपरा से एक अटूट एवं अमिट लगाव दृष्टिगोचर होता है ।

'लोक' शब्द के लिए अनेक विद्वानों ने परिभाषाएं दी हैं :-

कुंदनलाल उप्रेती उस समुदाय को लोक मानते हैं, जो अनपढ़, गँवार हैं, जिसमें कोई संस्कार या बनावटीपन नहीं है, जो आदिम प्रवृत्तियों एवं परंपराओं को जान से बढ़कर मानता है एवं सदैव उनसे चिपका रहता है ।"72

प्रत्येक व्यक्ति में एक रागात्मक प्रवृत्ति विद्यमान रहती है । और जब व्यक्ति अपनी इस प्रवृत्ति को रागात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है तो उसे गीत कहा जाता है । लोक गीत ग्राम्य समाज के प्राण हैं । यह लोक गीत ग्रमीण समाज क में सभ्य एवं असभ्य मनुष्य के हृदय में बसे हुए हैं । लोक गीतों के माध्यम से इनकी सम्पूर्ण संस्कृति उभरकर सामने आती है ।

लोक गीत के विषय में महात्मा गाँधी अपना मत प्रदानक रते हुए कहते हैं, "ये गीत जनता का साहित्य है, सच पूछो तो लोक-गीत ही जनता को भाषा है ।"73

उसी प्रकार रामनरेश त्रिपाठी का मानना है, "ग्राम-गीत तो प्रकृति का वह उद्यान है, जो जंगलों में, पहाड़ों पर, नदी-नालों पर स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ है ।"74

इसके अतिरिक्त लोकगीतों की प्राचीन परंपरा के विषय में रामनरश त्रिपाठी लिखते हैं - "जब से पृथ्वी पर मनुष्य हैं तब से गीत हैं, जब तक मनुष्य रहेंगे, तब

तक गीत रहेंगे । मनुष्य की तरह गीतों का भी जीवन-मरण साथ चलता रहता है । कितने ही गीत तो सदा के लिए मुक्त हो गये । कितने ही गीतों ने देशकाल के अनुसार भाषा का चोला तो बदल डाला, पर अपने असली स्वरूप को कायम रखा । बहुत से गीतों की आयु हज़ारों वर्ष की होगी । वे थोड़े फेर-फार के साथ समाज में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं ।"75

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में कहीं-कहीं लोकगीतों का प्रयोग हुआ है । जिससे राही जी का हिंदुस्तानी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम अभिव्यक्त हुआ है । राही जी के उपन्यासों में प्रयुक्त होने वाले लोकगीतों के उदाहरण कुछ इस प्रकार हैं -

विवाह के समय गाये जाने वाले लोकगीतों का उदाहरण :-

"देखो तो समधिन आयीं हैं बड़े मज़ेदार-सी
आगे गड़हिया पीछे गामा का पुल.....
शरबत पीके हुई मतवाली,
मूतेंगी छुल... छुल ... छुल..
समधिन तोरा डोला चने खेत में
समधिन को पकड़ा बागन के बीच में
माली से अँखिया लड़ाये
बड़ी लौंडेबाज़
बड़ी गुँडेबाज़ ! "76

बदरुन की बारात आने पर गाँव की औरतें गीत गानें लगीं :-

"बड़ी धूम-गजर से आया री बना ।
कुम्हार की गली हो आया री बना ।
अपनी अम्मा नचाता आया री बना,

सब लोग कहें कुम्हार का जना ।
बड़ी धूम-गजर से आया री बना ।
महतर की गली हो आया री बना ।
अपनी दादी नचाता आया री
सब लोग कहें महतर का जना ।
बड़ी धूम गजर से आया री बना ।"77

विवाह के समय मिरासनों द्वारा गाये जाने वाले लोकगीत :-

"कोठे से बड़ा लम्बा हमारा बना
बन्ने की अम्मा बाँस बरेली
बन्ने की अब्बा टेनी मुर्गा हमारा बना
कोठे से बड़ा लम्बा हमारा बना ।"78

उसी प्रकार ...

"शिमले का ऊँचा पहाड़
बना मोरा मोटर से जायेगा . . ."79

"सुन रे बने तोरी बड़की बहिनिया
कोठे पे बैठी है पहिने नथुनिया
प्यार देती है सबको उधार चने के खेत में-"80

"रसगुल्ला घुमाय के मार दियो रे ।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुर जी को मारा ।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुर जी को मारा ।
उनको बूढ़ा समझ के छोड़ दियों रे ।
रसगुल्ला घुमाय के मार दियों रे ।"81

विवाह के बारे में सोचकर बिल्लो के दिल में शहनाई बजने लगती है । वह सोचने लगती है कि गाँव की तमाम औरतें ढोल पर गीत गा रही हैं । यथा :-

"चेहरा न करियो उदास,मैया मैं तो पास रहूँगी
अपने ससुर को मैं बाबा कहूँगी
तो बाबा न आएँगे याद
मैया मैं तो पास रहूँगी-"82

विदाई के समय गाँव में गाये जाने वाले लोकगीतों का प्रयोग राही जी ने अपने उपन्यासों में यूँ किया है :-

"दमड़ी का सेंनुर महंग भई बाबा,
चुनरी भई अनमोल ।
एही रे सेंनुरवा के कारन रे बाबा,
छुड़ल्यों मैं देस तुहार ।
डोलिया का बाँस पकड़े रोयें बीरन भैया
बहिना मोरी दूर देसी भई, परदेसी भई ।
कौन लगैयहे बजरिया मे आखिर बीरन के अँसुअन का मोल रे
बाबुल,
चुनरी भई अनमोल -"83

कटरा बी आर्ज़ू उपन्यास में बिल्लो के द्वारा गुनगुनाया जाने वाला लोक गीत जो वह कपड़ों पर इस्त्री करते-करते गुनगुना रही है :-

"मोको खरच दयि जाना पिया जब जाना बिदेसवा रे
ननद मोरी री बड़ी लड़ाका
वै को खसम कर जाना पिया जब जाना बिदेसवा रे
मोको खरच दयि जाना पिया ।"84

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में शब्दों की विविधता :-

शब्दों के अभाव में भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती । भाषा का मूल शब्द में है । शब्द ही भाषा को शक्ति प्रदान करता है । शब्द की शक्ति ही व्यक्ति को अर्थ प्रदान करती है जिसके माध्यम से वक्ता श्रोता को सुख एवं दुःख की अनुभूति कराता है । भाषा में प्रयुक्त शब्द के दो पहलू हैं, शब्द एवं अर्थ । इस संबंध में डॉ० विद्याधर जी लिखते हैं - "शब्द के दो पक्ष होते हैं प्रथम पक्ष इसका 'शरीर' होता है । जिसके अन्तर्गत इसकी निर्माणिक ध्वनियाँ आती हैं । द्वितीय पक्ष इसका 'अभ्यंतर'पक्ष है जिसे इसका अर्थ कहा जाता है । अर्थ शब्द की आत्मा एवं स्वाभाविक विशेषता है । इन दोनों का सम्बन्ध विच्छेद कभी नहीं होता । इस प्रकार दोनों अन्योन्याश्रित हैं । शब्द और अर्थ के इसी सम्बन्ध के कारण शब्दों भावों, वस्तुओं और पदार्थों की पृथकता का बोध होता है । "85

शब्द के लिये अनेक विद्वानों ने परिभाषाएं की हैं :-

महाभाष्यकार पतंजली के अनुसार - "शब्द कान से प्राप्त, बुद्धि से ग्राह्य तथा प्रयोग से स्फूरित होने वाली आकाशव्यापी ध्वनि है ।"86

उसी प्रकार डॉ० भोला नाथ तिवारी के अनुसार "शब्द अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई है ।"87

आचार्य श्याम सुन्दर दास ने (हिन्दी शब्द सागर) 'शब्द' की परिभाषा देते हुए लिखा है - "वह स्वतंत्र व्यक्त और सार्थक ध्वनि जो एक या अधिक वर्णों के सहयोग से कंठ और तालु आदि के द्वारा उत्पन्न हो और जिसमें सुनने वाले को किसी पदार्थ कार्य या भाव आदि का बोध हो, उसे 'शब्द' कहते हैं ।"88

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि वह ध्वनि जिससे अर्थ पूर्ण होता हो, वह शब्द कहलाता है ।

डॉ० राही मासूम रजा के उपन्यासों में प्रयुक्त शब्दों में विविधता दृष्टिगोचर होती है ।

यथा :-

<u>आधा गाँव</u>

उर्दू शब्दः-

शिकायत, तसबीह, बहरहाल,16 खूबसूरत, ज़मरुंद, चंदे-आफ़ताब, चंदे-माहताब, ख़ानदान, क़ब्ज़ा 17 गुनाह, मजलिस 19 निहायत, दस्तरख़्वान, नफ़ीस 22 अज़ीज़ दल्हन, शरीक़ 23 खुशनसीब, कमीज़, इत्मीनान 24 मुख्तलिफ़ 30 मश्क़, शख़्सियत, 31 क़त्ल 33 गवाह, मशहूर, रौशनी, तुरबतों, सेहरा, 37 ज़ख्मी, जुलजनाह, कर्आन, आयतें 38 बयाज, पुरसा 39 ज़िम्मेदार, वज़ीफा 40 अहमियत, बक़ाया 42 निस्बत, क़िस्सा, वालिदा 43 सोज़ख़्वानी, 44 पैग़ंबर, खलीफ़ा, महफ़िल, मक़तब शायर 46 क़सीदा, गुमराह, एहतियात 47 कर्बला, आहिस्ता, अजनबी सफ़ 48 कँब्ज़ा, फ़र्क़, मरीज़, नुक़सान, जलसा 49 मुक़र्रर, अलमों, मुजरा 52 कर्बलाए-मुअल्ला, क़रीब, मातम, हिम्मत 53 क़ामयाब, मुतमइन 54 यज़ीद, बज़ाहिर, बेख़बर, लतीफ़े, मरतबा, बग़ावत, काफ़िरों, मुल्क 58 ताज़ादम, महसूस, तनज़ेब, शीरे, फ़ौरन 61 गुसलख़ाना, 62 सिवाय, सोज़ख़्वानी, पेशख़ानी 65 यक़ीन, माखूज़, तलाक़ 66 ग़िलाफ़, मामूली, सदरुल्फ़ाज़िल 67 हज्जाम, आमदनी 68 तहतख़्वानी, बस्तों, गुलाबपाशों, खुशबूदार, फ़ालिज़, क़ाबिल 69 नक़ाब, ग़ारत, तालीम, आरज़ू, ज़री, फ़रहरे तमामी, निक़ाबत 70 फ़रियाद, क़नातों 72 इत्तफ़ाक़, नामज़द 73 इमाम चौक, माफ़ी, हिसाब 74 ज़िल्लत, क़बूल, क़रीब, ज़मीन 75 लहज़ा, बाक़ायदा 76 शोहरत 79 मशवरा 81 तश्तरी, तकलीफ़, मुख़ातिब 83 जिरह, नमाज़, दाख़िल 84 तफ़तीश 86 महफ़िल, मोमिन, दाग़ परवाह, शरीफ़ 88 तवायफ़, जुमेरात, मज़ार, रहमत, फ़रिश्ते 90 बावर्चीख़ाना, ज़ाहिर, माशाअल्लाह 93 नब्ज़, काफ़िर 96 हौज़, मग़रीब 97 जुहर, इजाज़त, ईमान 98 वुज़ू, ग़नीमत, शागिर्द, ख़लीफ़ा 99 मस्जिद, हज, इशा 103 राज़दार 104 इंतक़ाल, क़िबलाओ-काबा, मुताबिक़, ज़नानख़ाना 106 नफ़रत, तफ़सीलात, नाजायज़ 107 शिरकत, निकाह, 108 दुआ, तावीज़, एतक़ाद, नज़र-न्याज़ 110 क़लमदान, तोफ़तुलअवाम, पंज सूरह, नादेअली 111 इसतेलाही, ख़तो-किताबत 112 बेवा, ज़हन

118 लम्स 119 मुख़्तलिफ़ दाख़िल 122 शुजाअत, मुज़ाहिरा 130 शिनाख़्त, ख़ामख़ाह 136 शौहर, आबरू, जुज़ 140 सुर्ख, हकीक़त 142 ख़लफ़िशार, बेज़रर 143 मेहमाननवाज़ी, फ़रायज़, ताल्लुक़ात 144 शिद्दत, ताज्जुब 155 मोमनीन, बआवाज़े-बुलंद, तकबीर, ना-मरहम, तिजारत 167 क़यामत, क़लम, मुतवज्जा 175 बेवकूफ़, नौबत, 181 बदतमीज़, शरीफ़ 182 जुमला, नालायक, शरारत 183 हिक़ारत 204 मशगूल 205

भोजपुरी शब्दः-

हुइहै 19 पाइजामा, भाउज, 26 पहुँचय्यहे 30 ओहर, आइल, केकी, माई, अबहियें, तरकरिया 31 एलेकशनवा 36 चच्ची, 72 लिहिस 41 पैरवा, कूँच, जूतियन, कहिन, कइसे 44 फ़िकिर, कहियो, गोदमवा 52 किहल, पइसा, नुसखवा, जउन, काँगरेस, इकदम्मे, दिहिन, बलरमवा, सालन, 97 बाड़ीं, लगम्या, गइल, चिचियावत 100 कहिहें, हरामियन 107 नय्हरवालन, धीया, बियाह 108 घरवा, दक्खत, भिखमंगन, दुलहिन, सोचय्यु, कीहिन 109 बख़त, लड़कियन, बहिनी, होइहे, एक ठो 110 लच्छन, चुरगो 111 खइबे, बिवयन, रहीला, मुस्कियात बाडू, दोहथ्थड़, होंठवा, देइब चिक्कन, सपरी, दुई, मेल्ह, तोहार, बनाइब, मुस्कियाबल, जइहा 113 हलुआ, पकइबे, 114 अबहि, कतिहत्थ्युँ, परसोएँ 121 दू रुपिया 127 बिटवा, लशिया, करत्युँ 130 फिरिहो, लगिहो, ऐसन, पंचन 133 जैसन, तैसन, बुलाइन, हमरहू 138 जुअन, तुअन 146 लड़कवे, तोहरी 149 जनतियूँ, नौज, रहियूँ 159 होतियो, बकतियू 166 उतारब 167 तुहरियो, ओके 171 काटिब, बुर्बक, मियँहु, उहके, 173 अकड़ब, टँगिया 177 अभैन, बताइब 179 बैलन, डलीहे, दुहिहे, खेतवा, अंगोरीहे, किहिस 183 जित्ता, हम्में, मारिन, तसवीरिया 184 कहत, रहल, बिगड़लन, देहलन, छउँक 193 लड़्यो, पढ़वैयय्हों, चलिहौ 196 सोच्यों, चाहिन, पढ़िस 202 जलिथ्यु 209 कटिहों, पकड़िहों, करत्यो 214 मुलुक, समझ्यो, बुलव्वा, बढ़तिये 221 अँगनवा, बिटियन, ज़बनिया, बिगाड़िन 231 मुँहवा, लिपटइबो 234 शहरवा, 238 तनिको, इमानवालन, जोलहा 242 चिनियो, पकाइन, ओपर, कभई, पकिस्तनवा, बाश्शाह, जानथ्यो, जय्यहे 245 भूक, बड़िठिए, करल्यो 247 लिक्खिन, क़िसिम, फ़सिल 254 डागदरन, खंबवन,जाथ्यो, हुक्क़वे, सोनहू 259 ओठरा, खोजिस, हिंदुअन 264 बवासिरियो, जोतवाय्यहें 265 ज़मिनिया, बटय्या, यूनियनो 280 बिगहा, नाहियो, 282 पेटवा, 303 घुरबै 311

पनिया, 317 कुच्छ, अउरी, लउकत, कैयसन, चमड़ाधा, बुहनी, ससुरावालन, पाहुन 324 दुलाइ्यो, खटपटिये 326 लंबर, भिजवाइ्न, दूनों, रिस्तन, रोउत 329 कलब, उतनीय 330 महतारी, भातर, लगियो 331 घों 333 एमिल्ले, ज़बनिया, खाहनपीटी, बरब्बरे, नजिस, झाडूमारी 335 जिहल 337 गलियन, गँधिया 343

अंग्रेज़ी शब्द :-

प्रोफेशनल 46 पापुलैरिटी 72 कांस्टेबल 86 कलक्टर, प्रीवी कौंसिल 96 लेफ़्टिनेंट, विक्टोरिया 103 सप्लाइ् 127 क्वारटर 169 फ़ैशनेबुल, फर्स्ट डिवीज़न, हाई स्कूल 201 इंजीनियर 227 इलैक्शन 239 डैम्मिट, बास्टडस 252 हिस्टीरिया, ग्लूकोज़, युनिवर्सिटी 304 सेकंडहैंड, ब्रीफ़-केस 307 ग्रीन लेबल 309 प्रोग्राम 312

सीन : 75

उर्दू शब्द :-

क़ैद, गिरफ़्तार, इ़ज़्ज़त,09 हिसाबे तिजारत, मौक़ा 10 एहसान, सिलसिला, यदियों 13 मशहूर, रोशनाई, मजबूर, माजोर, बेबस, खुश्क़ 14 मसहरी, ग़म, ग़लत, फ़िक्र, क़सूर 17 तख़्ती, मियानी, पाजामे, खफ़ा, गज़ब 18 आमतौर, अब्बा, अबुलख़ैर 22 नाहक़, ग़ारत 29 क़ायल, मंज़िल 32 सुस्त, ज़िद 33 ग़िसफ़ारिश, लिफ़ाफे 34 आजिज़, रक़म, मुसाफिर 37 काफ़ी, क़हक़हा, फ़र्ज़, ज़हरे-इ़श्क़ 39 बेतकल्लुफ 45 आज़माना, तनहाई 47 महसूस 51 तअल्लुक, कायल 66 तफ़्ता, गाह-गाह 115 ख़ैरियत 119 गफ़न-कफ़न 128

अंग्रेज़ी शब्द :-

एक्सिडेण्ट, सोशल वर्क, 13 फ्लैट, शूटिंग, शिफ़्ट, कमर्शियल, प्रैक्टिस, डाइ्रेक्टर, हीरो, हीरोइ्न 15 कैरेक्टर, आर्टिस्ट 16 फाइ्नेन्सर, इ्ण्डस्ट्री, असोसियेशन 19 ब्लिटज़, एजण्ट 20 प्रोपोज़ल, डिक्टेशन 22 एलेक्ट्रानिक्स, बिल-क्लेक्टर 25 न्यु ब्लाक, ओल्ड ब्लाक 29 एडवांस, लिपस्टिक, स्काच, फ्लर्ट, शेड 38 सब्जेक्ट, गोल्डन जुबिली 42 नेकिंग, ओल्ड-फ़ैशन्ड, ओरिजिनल 44 किचन, बाथरूम, बेडरूम 49 स्कीन, इ्मेज, आइ्डिया 63 बैंक-बैलेंस, हैपी-एण्डिंग 65 एम्बुलेंस, पोस्टमार्टम 126 कटलाग्स, कॉकटेल, पार्टी 129

कटरा बी आर्ज़ू :-

उर्दू शब्द :-

साज़िश, सरग़ना, 12 फ़राएज़, गरज़, तकरीर, फ़ाक़ा 17 क़मीज़, नेक, अललाह तआला, फ़रमाता 21 शरीक, मुसल्लम, नसीब 35 तरकीब, मुसतक़िल, खुद-ब-खुद, उस्ताद 41 सस्ती, ज़ियादती 46 सुन्नती, बुनियाद ख़्याल 61 इशारा, बेमौक़ा, इज़हार, फ़ेहरिस्त, क़ोर्मा, मुज़ाफ़र 65 मुहब्बत, मुरव्वत, अदावत 67 आइन्दा, नस्लें, नमकहराम, बाक़ायदा, तरक़्क़ी 92 नाइन्साफ़ी, खासुलखास 96 ग़रीबी, रोशनाई, खुशबू, दिमाग़ 98 मुख़ालिफ़, सफ़ 111 सवाल, म्आमले 118 रफ़्तार, क़दम, फ़ासला 129 फ़िक्रमंद 148 फ़रयाद आहिस्तगी 154 रोज़गार, बेख़ौफ़ी, हैरानी 193 बाक़ायदा 220

अंग्रेज़ी शब्द :-

फ़ैसिनेट, अकाउंट, लांडरी 29 सरविस, कैज़ुवल लीव 32 चीफ, जस्टिस, मिकैनिक, रिटायर 42 अफ़ेयर 51 फ़ोटोग्राफ़र, स्टयरिंग व्हील, 56 ओवरकोट, कॉलर 86 टीचर्ज़, स्टेचू 102 होमियोपैथी, वर्कशॉप 106 हाई कोर्ट, टाइपिस्ट 110 पॉलिटिक्स, कांस्टिचुएंसी 117 इंस्पेक्टर 136 ब्वाय फ्रेंड, मॉडलिंग 147

टोपी शुक्ला

उर्दू शब्द :-

शरीफ़, बेरोज़गार, अख़बार, मौक़ा-बे-मौक़ा, आख़िर 08 ख़बरदार, मज़ाक़ 10 अललाह मियाँ, गरज़, अक्सर, जन्नत 14 बेहद, खुशामद 17 तशरीफ़, मोहम्मद, पैग़म्बर 23 फ़र्क़, नमाज़ी, बीबी, करबला, नजफ़ 25 लफ़्ज़, अम्मी, अम्मा 27 अच्छा-ख़ासा, नज़रे-बंद ख़ास, शग़ल 33 मुशायरा, अब्बू 40 ख़्वाब, क़ाबिल, होशियार, मीलाद-ए-नबी 45 कमज़ोर, पनाह, मुख़ालिफ़त, ज़िना, रूह 53 फ़रज़, वफ़ादारी 59 तारीफ़, माशूक़ा, बेआबरुई, बदनाम, सेहत, क़ीमत 61 ग़ौर, पयाम, शहज़ादी 67 फ़ुज़ूल, ज़िन्दगी, सज़ा, बग़ैर 93 आबरू, आक़ा, क़ायम 109 ज़ाहिर, क़िस्सा, ख़बरदार 110 लकीर, महफ़ूज़, 112 रुआँसा, मुख़ातिब, क़हक़हों 114

अंग्रेज़ी शब्द :-

ट्रान्सलेट, ग्रामर, 07 प्रनंसियेशन, निगेटिव, ऐक्टिव, अमेंडमेंट, एपलाई, कॉलिज 09 प्रोपेगण्डा 10 मिजारिटी, मिनारिटी, कम्युनिटी 12 ब्लैक एण्ड ह्वाइट, 17 कम्पाउण्ड 22 रिएक्शनरी, इंफिरिआर्टी, काम्पलेक्स 42 सेक्स, फैनिटिसिज्म 56 गोल्ड मेडिल, लॉजिक, इंडिपेंडेंस 59 सीरियस, स्कैंडल 61 पार्टनर, कॉल, थीसिस 62 वेटिंग, स्पीकर 83 लोकलाइज़्ड, फिनोमिना, रिज़ाइन 91 फ़ादर-इन-लॉ, इंटरव्यू 93 क्वालीफाइड, अंकल 95 क्लासिकल, स्टुडेण्ट 101 इंटिगरेशन, डेलीगेशन, असेम्बली हॉल 109 कैम्प, सिन्सियर 110

नीम का पेड़ :-

उर्दू शब्द :-

मियाँ, फ़रक़, क़िस्सा, इत्तिला, कोशिश 10 तामील, ख़ुशख़बरी, नमाज़ 11 फिलहाल, ख़िलाफ़ 13 हश्र, आफ़त, ख़ातिर, तफ़्तीश 14 ज़नानख़ाने, तलाक़ 15 ख़ारिज, बवा गवाह 16 ज़माना, ख़ालू, मरहूम, कमअक़्ली, तख़्ता, क़िस्मत 23 मुल्क, फ़रमान, मेहरबानियाँ, ख़ौफज़दा 24 बदनसीबी, दस्तख़त, दरख़्वास्त, मुलिफत 25 इस्तक़बाल, रौनक़ 29 नामज़द, मुतमइन, ओहदा 30 बन्दोबस्त, रिहाई, हैरत 34 खालाजान, इन्तक़ाल, मक़सद 38 शानो-शौक़त, सरगोशियाँ, ख़ौफ़ 40 नज़राना, तोहफा, क़ातिल 44 नज़दीकी, शाइस्तगी, नावाक़िफ 45 जज़्बा, शिनाख़्त 48 इन्तज़ाम, वग़ैरह 49 तवारीख़, हुकूमत अफ़वाहें 50 मुताबिक़, मसला, नसीहत 58

अंग्रेज़ी शब्द :-

लेडी 14 मर्डर 16 एग्रीकल्चर, अबॉलिशन 20 ग्रेट, सोशल, वर्कर, एडवाइज़र 40 एसेम्बली 47 फ्लाइट 58 प्रोग्रेस 69 इमोशनली ब्लैकमेल, पालिटिक्स, इलैक्शन, कैरेक्टर 77

दिल एक सादा काग़ज़ :-

उर्दू शब्द :-

मज़ाल, नक़शीन, आतिशदान, मलमल 09 ज़ाहिर, फ़र्क़, रोज़ा, ख़ाविन्द, ख़िदमत 11 क़ाबिल, क़ायदे, महक 16 पैग़म्बर, नेकबख़्त, ज़ालिम, इज़ाज़त 18 रोज़ाना, कमरबन्द, मियानी 19 बेवफा, बेशरम 21 कब्र, मज़ार 23 क़यामत, परवरदिगार 31 शरीफज़ादियाँ, पर्दानशीन, लमहा 40 सिफ़ारिश, हरगिज़ 43 परवाह, इरादा, आलीशान, तक़रीर, 49 इन्तिज़ार, काबा शरीफ़ 61 शीन-क़ाफ़, सलाम 65 ज़ुमलेबाज़ी 66 अस्ली, शक्ल, ईमान 68 तारीफ़, तख़ल्लुस 70 रोशनदान, लेहाफ़ 73 बुर्क़ापोश, महबूबा 79 आयतरलकुर्सी, हलक़ 83 वज़ीफ़ा, परहेज़गार 84 फ़रमाइश, मख़सूस 86 ख़िदमतगार, अब्र, तबाही 87 ख़ुराफ़ातें, मुख़ालेफ़त, अन्दाज़ा, तामील 109 ज़र्रे, बेसाख़्ता 111 कमबख़्त, कव्वाली 113 तसलीम 114 अहमक़, पाख़ाना 116 उदासी, हज़्म 117 मुसतक़िल, निक़ाब 132 बिसमिल्लाह, हू-ब-हू 210

अँग्रेज़ी शब्द :-

ट्राइसिकिल 21 पब्लिक, ह्स्किी, स्क्रीनप्ले, डायलॉग 43 पेण्टिंगस, मॉर्डन, स्मगलिंग, आर्टिस्ट, लैण्डस्केप 47 इण्ठीरियर, डेकोरेटर 48 पोर्ट्रेट 50 लोकल ट्रेन, टेस्ट 56 सिचुएशन, वण्डरफुल, डायलॉग 57 टुइस्ट 59 प्राविडेण्ट फण्ड, इनक्रिमण्ट 67 टाउन, एरिया 104 माइक्रोफ़ोन 138 कन्टेम्पोररी, अवेयरनेस, फ़्लेक्स 142 कॉन्ट्रैक्ट, ऐटिप्युड, ट्रैजिडी 155 युज़ुअल, ऐप्रोप्रिएट, ऐडमिनिस्ट्रेटर 158 एजूकेशन 193 नेक्स्ट, ऐटमास्फ़ीयर, बिगिनिंग, साइनिंग, एमाउण्ट 196 क्रेडिट, इन्सटालमेण्ट 198

ओस की बूँद

उर्दू शब्द :-

तक़रीर, नतीजा, ख़ासा नज़्में 12 क़ायदे-आज़म 13 दस्तख़त, सियासत, नफ़रत 14 हिक़ारत, ग़ैरत 18 हिजरत, फ़लसफ़ा, सरज़मीन, गुनाहगार 19 इस्लाम 21 दरख़ास्त 23 रहमत, तसलीमात 25 शुक्रिया 26 तक़दीर 28 ज़बान 29 लफ़्ज़, ज़बान 31 मेहर, फ़ारिग़, सलाम 32 ज़हीन, तसवीर 35 ख़फ़ीफ़े, ख़ारिज, आशिक़ 38 शिकनें, शौक़ 39 ग़ज़ब, इम्तिहान, क़ाबिल, नख़रे 41 अक़सरियत, औलाद कफ़न, जेहाद, दफ़ा 46 क़ायम, वक़्फ़अल्लाह, मुतवल्ली 47 ख़ौफ़, क़ायदे-आज़म, शरीक, साज़िश, तकरार 48 ख़फ़ा, गिरफ़्तार, सदक़ा 50 मरहूम, बेवक़्त,

ज़िंदा 52 मुवक्किल, तज़रबा, मुशतइल 55 इसरार, बदतमीज़ी 56 हसरत, मज़ार, सख़्त, ज़रूरत 59 इश्तहार, गंजाइश, मज़ार 60 फ़कीर, तेज़ाब, शर्मगाह 66 ज़हमत, फ़ुरसत 71 ज़िक्र, फ़क़त, रोज़, आख़िर 75 तवायफ़, लुत्फ़, अफ़ीम, आदाब 78 हलक़, ताल्लुक़ 87 वफ़ादार, अरमान 87 क़यामत, निसबत, इश्क़ 96 अंजाम, तारीख़ 101 गुज़ारिश, मुस्तग़ीसा, मुसम्मात, नौईयत, मुख़तलिफ़, मुवक्किला 106 हिफ़ाज़त 112

अंग्रज़ी शब्द :-

हायर सेकेंडरी, युनिवर्सिटी 11 आल इंडिया, लीडर, एंट्रेंस 13 म्युनिसिपल बोर्ड, ऐंग्लो वर्नाक्यूलर, ओल्डम लायब्रेरी, मेमोरियल 16 डिग्री कॉलेज 21 एडवोकट 26 कस्टोडियन 31 अप्वाइंटमेंट, पोस्ट, टेंपोरेरी, डेपुटेशन 38 कम्युनिस्ट, हिस्ट्री, क्लासफेलो, जूनियर, लेक्चरर 40 ट्रंप, मीटिंग 44 टेनिस, रोड, कांफ्रेंस, स्ट्रीट 64 ब्लाटिंग पैड 69 पब्लिक, रिलेशन, कैंडिडेट 75 वाटर टैक्स प्रिंसिपल 77 मेडिकल साइंस, न्युसेंस, वैल्यु, सेक्रेट्री 83 कम्युनलइज़्म, फ्रस्ट्रेशन, प्लीज़ 84 हिपॉकेट, सेकुलर, कम्युनल, सेकुलरिज़्म 85 एक्सटंशन, फेवरिट, राइटिंग, पेंडुलम, लीडिंग रोल, असाइन 96 डेमोक्रेसी म्युनिसिपल 112 जुडिशियल, मैजिस्ट्रेट 105 एक्साइटेड, एक्टर 108

इस प्रकार अभिव्यक्ति पक्ष की दृष्टि से राही जी एक सफल उपन्यासकार सिद्ध हुए हैं । राही जी की भाषा में विविधता दृष्टिगोचर होती है । भाषा की दृष्टि से राही जी के सभी उपन्यास अपना एक अलग स्थान रखते हैं । डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में भाषा के अनेक स्तर दिखाई दिये हैं जिसमें उनकी भाषा की कुशलता के दर्शन हुए हैं । वैविध्यपूर्ण भाषा के कारण ही राही जी के उपन्यास एक विशिष्ट श्रेणी में आते हैं । यह वैविध्य प्रयासपूर्वक नहीं बल्कि सहज रूप से आया है । परिवेश और चरित्र के अनुसार सहज रूप में भाषा के विभिन्न स्तर अभिव्यक्त हुए हैं । अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भाषा की दृष्टि से हिन्दी साहित्य जगत में डॉ० राही मासूम रज़ा का एक विशिष्ट स्थान है ।

******

संदर्भिका

1. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ०229
2. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ०228
3. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 230
4. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 17
5. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 18
6. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 71
7. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 77
8. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 160
9. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 322
10. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 166
11. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 282
12. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 37
13. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 199
14. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दभ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 231
15. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 09
16. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 105
17. कथाकार भीष्म साहनी, कृष्ण पाटिल पृ० 224
18. हिन्दी के आँचलिक उपन्यास, डॉ० विद्यादर द्विवेदी पृ० 117
19. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 69
20. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 31
21. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 338
22. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 19
23. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 92
24. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 36
25. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 23

26. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा प० 78

27. हिन्दी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ० गिरीश सिंह पृ० 270

28. दिल एक सादा, आधा गाँव पृ० 126

29. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा 36

30. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा 142

31. उपन्यासकार मधुकर सिंह, डॉ० संजय नवले पृ० 157

32. उपन्यासकार मधुकर सिंह, डॉ०संजय नवले वही पृष्ठ

33. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा 27

34. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा 253

35. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 254

36. ओस की बूँद,डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 09

37. ओस की बूँद, डॉ० राही मासूम रज़ा वही पृष्ठ

38. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 69

39. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 10

40. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 65

41. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 166

42. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 283

43. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 70

44. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 85

45. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 10

46. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 74

47. दिल एक सादा काग़ज़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 72

48. व्यंग्य का समकालीन परिदृश्य, सं० प्रेमजनमेजय पृ० 51

49. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 32

50. नीम का पेड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 30

51. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 103

52. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 91

53. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 178

54. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम शुक्ला पृ० 21

55. कटरा बी आर्ज़ू, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 32

56. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 199
57. टोपी शुक्ला, डाॅ० राही मासूम रज़ा प० 86
58. कटरा बी आर्ज़ू, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 51
59. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 188
60. ओस की बूँद, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 30
61. ओस की बूँद, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 19
62. दिल एक सादा कागज़, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 66
63. टोपी शुक्ला, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 22
64. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 26
65. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 256
66. टोपी शुक्ला, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 29
67. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 168
68. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 302
69. टोपी शुक्ला, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 58
70. टोपी शुक्ला, डा० राही मासूम रज़ा पृ० 69
71. हिन्दी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डाॅ० गिरीश सिंह पटेल पृ० 17
72. हिन्दी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डाॅ० गिरीश सिंह पटेल पृ० 20
73. हिन्दी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डाॅ० गिरीश सिंह पटेल पृ० 30
74. हिन्दी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डाॅ० गिरीश सिंह पटेल पृ० 30
75. अवधी और भोजपुरी लोकगीतों का सामाजिक स्वरूप, अनीता उपाध्याय पृ० 37
76. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 272
77. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 161
78. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 162
79. आधा गाँव, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 276
80. कटरा बी आर्ज़ू, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 83
81. कटरा बी आर्ज़ू, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 86
82. कटरा बी आर्ज़ू, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 73
83. कटरा बी आर्ज़ू, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 74
84. कटरा बी आर्ज़ू, डाॅ० राही मासूम रज़ा पृ० 30
85. हिन्दी के आँचलिक उपन्यास, डाॅ० विद्याधर द्विवेदी पृ० 103

86. शैली विज्ञान : संकल्पना एवं स्वरूप, डॉ० पांडुरंग चिलगर पृ० 118
87. शैली विज्ञान : संकल्पना एवं स्वरूप, डॉ० पांडुरंग चिलगर पृ० 119
88. द्विवेदी युगीन काव्य शब्दावली का भाषा वैज्ञानिक, डॉ० अर्चना आर्य पृ० 15

******